Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
Volume-14, Issue-4, March-2021
www.researchguru.net

पुनर्जागरण कला आन्दोलन में ई.बी. हैवेल की भूमिका

डॉ. रीतिका गर्ग
सहायक आचार्य
चित्रकला विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय
जयपुर।

कनक शर्मा
शोधार्थी
चित्रकला विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय
जयपुर।

संक्षेप

जिस समय यह माना जा रहा था कि भारतीय कला और संस्कृति का स्वयं का कुछ भी मौलिक नहीं है। उस समय कुछ एसे पाश्चात्य कला–समीक्षक भी थे जो हमारी संस्कृति व कला को उत्कृष्ट धरोहर के रूप में स्वीकार कर रहे थे। इन्होंने भारतीय कला की उपलब्धियों का सूक्ष्मता से अध्ययन कर उसका वास्तविक परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन किया। इस समय भारतीय कला के महत्व को सही दृष्टिकोण से मूल्यांकित करने वाले अर्नेस्ट बिनफोर्ड हैवेल अग्रिम कला समीक्षक रहे। हैवेल ने भारतीय कला को वास्तव में अपनाया था।

हैवेल 'इंडियन एज्यूकेशन सर्विस' के अधिकारी के रूप में भारत आये तथा उनकी नियुक्ति सन् 1834 ई. में ''मद्रास स्कूल ऑफ आर्ट्स'' में निदेशक के पद पर हो गई। सन् 1836 ई. में उनका स्थानान्तरण ''कलकत्ता आर्ट स्कूल'' के प्राचार्य और 'गवर्नमेंट आर्ट गैलेरी' के कीपर के पद पर हुआ। जब हैवेल मद्रास से कलकत्ता आये तो भारतीय कला के इतिहास में पुनर्जागरण या बंगाल कलम का एक नवीन अध्याय प्रारम्भ हुआ। वह कला–समीक्षक की अपेक्षा भारतीयता के प्रशंसक थे।

हैवेल ने भारतीय कला की महत्ता को बताते हुए कहा था कि, ''भारत की कला सर्वव्यापी अमर व अपार है, जबकि यूरोपीय कला केवल सांसारिक वस्तुओं का ज्ञान कराती है। साथ ही उन्होंने अनुभव किया कि भारत की कला प्रधानतः आदर्शवादी रहस्यमय, प्रतीकात्मक तथा अध्यात्मपरक है। ई.वी. हैवेल ने कलकत्ता के आर्ट स्कूल में 'उच्च डिजाइन' की कक्षा आरंभ की और अवनीन्द्रनाथ ठाकुर को उसका कार्यभार सौंपा। इस कला विभाग की स्थापना से भारतीय कला परम्परा को ब्रिटिश सत्ता से मंजुरी मिली और साथ में प्राचीन भारतीय कलाओं के शिक्षण की सुविधा भी प्राप्त हुई। हैवेल ने भारतीय व पाश्चात्य कला के मूलभूत अंतर को बताते हुए भारतीय कला के विकास के लिए सरकार को परामर्श दिया। इस प्रकार हैवेल के प्रयासों से भारतीय कला में पुनर्जागरण कला आन्दोलन का प्रारंभ।

मुख्य शब्द : *मर्मज्ञ, पुनर्जागरण, आदर्शवादी, रहस्यमय, प्रतीकात्मक, अध्यात्मपरक, न्यून्याधिक, बौद्धिक*

19वीं शताब्दी के अन्त तक भारतीय कला–परम्परा पर पाश्चात्य प्रभाव स्पष्टतः दृष्टिगोचर होने लगा था। अंग्रेजों ने भारतीय कला की कटु आलोचना की। बर्डवुड नामक एक अंग्रेज अधिकारी ने कहा था कि ''एक उबला हुआ चर्बी से बना पकवान भी आत्मा की उत्कट निर्मलता तथा स्थिरता के प्रतीक का काम दे सकता है।''[1] इस समय यह माना जा रहा था कि भारतीय कला और संस्कृति का स्वयं का कुछ भी मौलिक नहीं है। किन्तु जहां एक ओर कुछ पाश्चात्य कला मर्मज्ञ हमारी संस्कृति का उपहास कर रहे थे वहीं दूसरी ओर कुछ ऐसे पाश्चात्य कला–समीक्षक भी थे जो हमारी संस्कृति व कला को उत्कृष्ट धरोहर के रूप में स्वीकार कर रहे थे। इन्होंने भारतीय कला की उपलब्धियों का सूक्ष्मता से अध्ययन कर उसका वास्तविक परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन किया।

इस समय भारतीय कला के महत्व को सही दृष्टिकोण से मूल्यांकित करने वाले अर्नेस्ट बिनफोर्ड हैवेल अग्रिम कला समीक्षक रहे। ई.बी. हैवेल ने भारतीय कला को सच्चे हृदय से अपनाया था। इनके बारे में राय कृष्णदास ने लिखा है कि, ''यह एक विलक्षण संयोग है कि राष्टीय धरातल पर कला को स्थान दिलाने वाले प्रथम व्यक्ति थे हैवेल, जो शरीर से तो अंग्रेज थे किन्तु मन से भारतीय।''[2]

हैवेल 'इंडियन एज्यूकेशन सर्विस' के अधिकारी के रूप में भारत आये तथा उनकी नियुक्ति सन् 1834 ई. में ''मद्रास स्कूल ऑफ आर्ट्स'' में निदेशक के पद पर हो गई। सन् 1896 ई. में उनका स्थानान्तरण ''कलकत्ता

आर्ट स्कूल'' के प्राचार्य और 'गवर्नमेंट आर्ट गैलेरी' के कीपर के पद पर हुआ।[3] जब हैवेल मद्रास से कलकत्ता आये तो भारतीय कला के इतिहास में पुनर्जागरण या बंगाल कलम का एक नवीन अध्याय प्रारम्भ हआ। वह कला–समीक्षक की अपेक्षा भारतीयता के प्रशंसक थे। इसलिए उन्होंने कलकत्ता कला महाविद्यालय की कला दीर्घा से विदेशी कृतियों एवं यूनानी प्रतिमाओं को हटवाकर राजस्थानी व मुगल शैली की कृतियों की अनुकृति करवाई।

हैवेल ने सन् 1896 ई. में भारत की कलाओं की ओर कला–मर्मज्ञों का ध्यान आकर्षित करते हुए कहा, ''भारत की कला सर्वव्यापी अमर व अपार है, जबकि यूरोपीय कला केवल सांसारिक वस्तुओं का ज्ञान कराती है। साथ ही उन्होंने अनुभव किया कि भारत की कला प्रधानतः आदर्शवादी, रहस्यमय, प्रतीकात्मक तथा अध्यात्मपरक है।[4]

सन् 1897 ई. में अवनीन्द्रनाथ ठाकुर हैवेल के संपर्क में आये।[5] हैवेल की प्रेरणा से अवनीन्द्रनाथ ठाकुर ने मुगल व राजपूत शैली पर आधारित चित्रों का निर्माण किया तथा भारतीय कला के पुनुरूत्थान के परिप्रेक्ष्य में एक कदम बढ़ाया। ई.वी. हैवेल ने कलकत्ता के आर्ट स्कूल में 'उच्च डिजाइन'' की कक्षा आरंभ की और अवनीन्द्रनाथ टैगोर को उसका कार्यभार सौंपा। उनका कहा था कि ब्रिटिश प्रशासन ने सिर्फ एक मौलिक भारतीय कलाकार को जन्म दिया है – अवनीन्द्रनाथ को।[6]

इस कला विभाग की स्थापना से भारतीय कला परम्परा को ब्रिटिश सत्ता से मंजूरी मिली और साथ में प्राचीन भारतीय कलाओं के शिक्षण की सुविधा भी प्राप्त हुई। इसके लिए हैवेल ने परम्परागत कलाओं के चित्रकारों को बुलाया जिनमें लाला ईश्वरी प्रसाद मुख्य थे। वे पटना कलम के साथ–साथ कांगड़ा शैली में भी पारंगत थे। उन्होंने कांगड़ा शैली की तकनीकी विशेषताएं शिक्षार्थियों को सिखाई, साथ में हैवेल, डॉ. आनन्दकुमार स्वामी व अवनीन्द्रनाथ को भी कांगड़ा शैली से परिचित करवाया। इसके अलावा जयपुर की भित्ति चित्रण की तकनीक को सीखने के लिए उस्ताद रामप्रसाद को बतौर कला–अध्यापक आमंत्रित किया, जिनके निर्देशन में अवनीन्द्रनाथ ठाकुर ने कुछ भित्ति चित्रों की रचना की। हैवेल के इन प्रयासों के कारण ही बंगाल में पुनर्जागरण का आन्दोलन प्रारम्भ हुआ, जिसमें उनका सहयोग अवनीन्द्रनाथ ठाकुर व आनन्द कुमार स्वामी ने दिया।

हैवेल ने भारतीय कला के सौन्दर्य एवं उत्कृष्टता पर अनेक लेख एवं पुस्तकों द्वारा प्रकाश डाला। उन्होंने भारतीय कला विषयक सात पुस्तकें लिखीं। सन् 1908 ई. में लंदन से प्रकाशित 'इंडियन स्कल्पचर एंड पेंटिंग'' हैवेल की संभवतः पहली पुस्तक थी, जिसमें भारतीय कला पर सविस्तार विचार किया था।[7] इस पुस्तक द्वारा हैवेल ने ब्रिटिश सरकार के भारतीय चित्रकला के प्रति अपनाये गये दृष्टिकोण की भर्त्सना की और भारतीयों को यह प्रेरणा दी कि वे अपने कलाओं के मूल्य को समझे और उसका संरक्षण करें। साथ ही विश्व के अनेक विद्वानों का ध्यान इस ओर आकृष्ट किया, जिसके फलस्वरूप पाश्चात्य तथा भारतीय कला–विद्वज्जनों ने भारतीय कला को गहनता से समझा। हैवेल द्वारा की गई सरकारी नीतियों की आलोचना का ब्रिटिश सरकार पर ऐसा असर हुआ कि न चाहते हुए भी अंग्रेजी सत्ता को भारतीय कला के विकास के लिए बहुत कुछ करना पड़ा।

उन्होंने भारतीय कला के मूल तत्व को समझने पर जोर देते हुए कहा कि ''यूरोप में हम कला के साथ इस तरह खेलते हैं, जिस तरह बच्चा खिलौनों के साथ खेलता है। बच्चा खेल का उपयोग समझे बिना, उसे केवल खेल की वस्तु मान कर खेलता है, उसी प्रकार हम कला के साथ खिलवाड़ करते हैं। क्योंकि हमारे लिए कला सदैव न्यून्याधिक व्यर्थ का कार्य है, जिसमें गंभीर और संवेदनशील व्यक्ति अपने आपको जहां तक संभव होता है, अलग रखते हैं। भारतीय व पाश्चात्य कला के मूलभूत अंतर को दर्शाते हुए हैवेल ने भारतीय कला के विकास के लिए सरकार को परामर्श दिया,

''भारतीय कला को उसके स्वभाविक विकास की धारा का अनुसरण करने के लिए उन्मुक्त छोड़ दिया जाना चाहिए और उन सभी बाधाओं को दूर किया जाना चाहिए, जो उसके रास्ते में हमने ड़ाल रखी है। ऐसा करने पर भारतीय कला देश की आध्यात्मिक व बौद्धिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकेगी और साथ ही जनता की समृद्धि को बढ़ावा दे राज्य के आय स्त्रोतों में वृद्धि कर सकेगी। भारतीय कला–शिक्षार्थियों को ऐसा वातावरण देकर, जो उनके नैतिक व बौद्धिक क्षमताओं का विकास कर सके, हमें प्रत्येक प्रकार से प्रकृति और कलागत सौंदर्य के प्रति उनके प्रेम को उत्प्रेरित करना चाहिए।''[89]

उपसंहार

संभवतः हैवेल ही प्रथम विदेशी कला समीक्षक थे, जिन्होंने भारतीय कला का गहन अध्ययन कर उसकी महत्ता को प्रतिपादित किया था। हैवेल ने अवनीन्द्रनाथ ठाकुर के सहयोग से भारतीय चित्रकला का पुनरूत्थान किया, जिससे बंगाल कलम या पुनर्जागरण कला आन्दोलन का उद्भव हुआ। हैवेल की प्रेरणा से ही अवनीन्द्रनाथ ने मुगल व राजपूत शैली पर आधारित चित्रों का निर्माण किया। निष्कर्षतः कह सकते हैं कि भारतीय पुनर्जागरण कला आन्दोलन में ई.बी. हैवेल का महनीय योगदान रहा।

संदर्भ

1 अग्रवाल, गिर्राज किशोर, आधुनिक भारतीय चित्रकला, संजय पब्लिकेशन्स आगरा, 2005, पृ.सं. 28

2 चतुर्वेदी, जगदीश चन्द्र, भारतीय कलाविद्, उमेश प्रकाशन, इलाहाबाद, 2002, पृ.सं. 39

3 वही, पृ.सं. 42–43

4 भटनागर, नैन तथा चन्द्रिकेश, जगदीश, बंगाल शैली का चित्रकला, अनन्य प्रकाशन, दिल्ली, 2001, पृ.सं. 19

5 वही, पृ.सं. 19

6 भारद्वाज, विनोद, वृहद आधुनिक कला कोश, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2006, पृ.सं. 71

7 भटनागर, नैन तथा चन्द्रिकेश, जगदीश, बंगाल शैली की चित्रकला, अनन्य प्रकाशन, नई दिल्ली, 2001, पृ.सं. 19

8 वही, पृ.सं. 20